एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बेर

(*डॉ. विनोद सिंह एवं डॉ. नवीन सिंह)
कृषि विज्ञान केन्द्र, अमहित, जौनपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vinodhort1971@gmail.com

बेर को भी गरीबों का सेब कहा जाता है क्योंकि यह सस्ते मूल्य पर प्राप्त हो जाता है तथा इसमें पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं।

जलवायु एवं मिट्टी

पौध में जलवायु की प्रतिकूल दशाएं सहन करने की क्षमता पाई जाती है। इसकी बागवानी शुष्क एवं जल मग्न दशा में की जा सकती है इसका पौधा प्रत्येक प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन गहरी बलुई दोमट भूमि जो हल्की क्षारीय हो, इसकी बागवानी के लिए उत्तम होती है।

किस्म

इसकी बहुत सी किस्में देश के विभिन्न भागों में उगाई जाती है। लेकिन इस किस्मों में जो अपने यहाँ के लिये अधिक उपयुक्त है। उनमें गोला, उमरान एवं बनारसी कड़का सबसे अच्छी है।

पौध की तैयारी और रोपण

इसकी बीज तथा कलिकायन विधि द्वारा आसानी से लगाया जाता है। इसकी जड़ें शीघ्र ही अधिक गहराई तक चली जाती है अतः जहाँ बाग लगाना हो वहाँ बीज बोकर वांछित किस्म का कलिकायन कर दिया जाय तो अच्छा रहता है।

भूमि के उपजाऊपन के अनुसार 6–8 मीटर की दूरी पर पौध लगायी जाती है। पौध लगाने के पहले एक मीटर व्यास के एक मीटर गहरे गड्ढे खोदकर इस में मिट्टी के साथ 25 से 30 कि.ग्रा. गोबर की सड़ी खाद, कि.ग्रा. अमोनियम सल्फेट तथा 9 कि.ग्रा. सुपर फास्फेट प्रत्येक गड्ढे में मिट्टी के साथ मिलाकर भर देना चाहिये। दीमक के प्रकोप से बचने के लिए 30 ग्राम 5 प्रतिशत बी.एच.सी. का धूल भी उन्हीं गड्ढों में मिला देना चाहिये। पौध लगाने का सर्वोत्तम समय अषाढ़–श्रावण (जुलाई–अगस्त) है, इसके अतिरिक्त माघ–फागुन (फरवरी–मार्च) में भी पौधे लगाये जा सकते हैं।

खाद और उर्वरक

एक वर्ष पुराने पौधों को को 10 कि.ग्रा. सड़ी गोबर की खाद 50 ग्राम नाइट्रोजन, 25 ग्राम फास्फोरस तथा 50 ग्राम पोटाश प्रति पौधा देना चाहिये। पौधों की बढ़ती उम्र के साथ प्रतिवर्ष इतनी ही मात्रा बढ़ाते जाना चाहिये। इस प्रकार 6 वर्ष या इससे अधिक आयु के पौधों को 60 कि.ग्रा. गोबर की खाद, 300 ग्राम नाइट्रोजन, 150 ग्राम फास्फोरस तथा 300 ग्राम पोटाश तत्व के रूप में देना चाहिये। गोबर की खाद तथा सुपर फास्फेट जून में तथा नाइट्रोजन एवं पोटाश की आधी मात्रा अषाढ़–श्रावण (जुलाई–अगस्त) तथा शेष भाग अगहन, पौष (नवम्बर–दिसम्बर) में देना चाहिये।

कटाई–छटाई

बेर में प्रारम्भिक कटाई छटाई पौधों को उचित आकार–प्रकार देने के लिये करना चाहिये। बड़े पेड़ों में अच्छी फसल पाने के लिये प्रतिवर्ष आधे वैसाख से जेष्ठ (मध्य मई से जून) के प्रथम सप्ताह

तक कटाई छटाई करना चाहिये। बेर में फल नई अथवा 9 वर्ष पुरानी शाखाओं पर लगते है अतः पुरानी शाखाओं का 20–25 प्रतिशत भाग काट देने से वानस्पतिक वृद्धि अच्छी होती है जिससे फलत भी अधिक होती है।

सिंचाई

वृक्षों की रोपाई के तुरन्त बाद सिंचाई करना आवश्यक हैं। इसमें सूखा सहन करने की शक्ति होती है। मौसम तथा मिट्टी की किस्म पर निर्भर करते हुये प्रति माह सिंचाई करते रहना चाहिये।

कीट एवं रोग नियंत्रण

फल मक्खी कीटः कीट की गिडार फल में छेद करके अन्दर का गूदा खा जाते हैं और फल बिल्कुल बेकार हो जाता है। इस कीट की रोकथाम के लिये ग्रसित फलों को तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिये। 500 मि.ली. मैलाथियान तथा 5 कि.ग्रा. गुड़ को 5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

बेर भृंगः भृग कीट पत्तियों को खाकर हानि पहुँचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिये 500 मि.ली. थायोडान या 1.5 कि.ग्रा. सेविन पाउडर को 500 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

सफेद चूर्ण रोगः ये फफूंदी द्वारा उत्पन्न होता है तथा जाड़े में इसका प्रकोप होता है। इसके प्रकोप से पत्ती तथा फल दोनों पर सफेद चूर्ण दिखाई देने लगता है, इसकी रोकथाम हेतु भादों (सितम्बर) के महीने में 0.1 प्रतिशत कैराथेन (1 मि.ली.) का एक या दो छिड़काव करना चाहिये।

उपज

पौध लगाने के 4 वर्ष के बाद एक वृक्ष से लगभग 100–200 किलोग्राम फल प्राप्त हो जाता है।